अध्याय 15

एलीपज का दूसरा भाषण

भाषणों के दूसरे दौर (15:1–21:34) में वक्ताओं की तीव्रता में बढ़ोतरी को स्पष्ट देखा जा सकता है। उनकी डांटें तीखी और अधिक निजी थीं। अफ़सोस कि मित्रों ने अपनी टिप्पणियों से मामले को ''ठण्डा'' करने के बजाय अधिक ''गरम'' कर दिया।

अध्याय 15 में, ''अय्यूब को एलीपज के लहज़े और उत्साह में ज़बर्दस्त बदलाव दिखाई दिया।''[1] एलीपज का भाषण तीन भागों में है: अय्यूब को उसकी रूखी और बेतुकी बातों के लिए डांट (15:1–6); अपने स्वयं के ज्ञान में अय्यूब के भरोसे को डांट (15:7–16); और दुष्टों की दुर्दशा का एलीपज का आकलन (15:17–35)।

अय्यूब के दोष का उसके भाषण से पता चला (15:1–6)

[1]तब तेमानी एलीपज ने कहा, [2]''क्या बुद्धिमान को उचित है कि अज्ञानता के साथ उत्तर दे, या अपने अन्त:करण को पूरबी पवन से भरे? [3]क्या वह निष्फल वचनों से, या व्यर्थ बातों से वाद-विवाद करे? [4]वरन् तू परमेश्वर का भय मानना छोड़ देता, और परमेश्वर पर ध्यान लगाना औरों से छुड़ाता है। [5]तू अपने मुँह से अपना अधर्म प्रगट करता है, और धूर्त लोगों के बोलने की रीति पर बोलता है। [6]मैं तो नहीं परन्तु तेरा मुँह ही तुझे दोषी ठहराता है; और तेरे ही वचन तेरे विरुद्ध साक्षी देते हैं।''

आयतें 1, 2. अय्यूब को उत्तर देते हुए **एलीपज** ने कई अलंकारिक प्रश्न किए, जिनके उत्तर ''न!'' होने की उम्मीद हो। इनमें से पहला प्रश्न यह है: **''क्या बुद्धिमान को उचित है कि अज्ञानता के साथ उत्तर दे, या अपने अन्त:करण को पूरबी पवन से भरे?''** मूल भाषा में ज़ोर देने के लिए ''बुद्धिमान'' (*chakam, चामाक़*) को प्रश्न के आरम्भ में रखा गया है। यह एलीपज के लिए कहा गया है या फिर अय्यूब के लिए? यह सवाल करते हुए कि क्या वह अपना दम अय्यूब पर बर्बाद करे, एलीपज अपने आपको ''बुद्धिमान'' कह रहा हो सकता है। दूसरा, जो कि अधिक सम्भव कदम लगता है यह है कि एलीपज अय्यूब की बुद्धि पर सवाल उठा रहा था (देखें 12:3; 13:2); वह अय्यूब पर गर्म हवा से भरे होने का आरोप लगा रहा था।

''अज्ञानता'' बिना काम के ज्ञान को कहा गया है। ''पूरबी पवन'' (*qadim, क़ादिम*) अरब के रेगिस्तान से आती है। अरबी लोग ''पूर्व'' के लिए अपने शब्द से इसे ''सिरोको'' (गर्म हवा) का नाम देते थे। ऐसी हवा गर्म होने और धूल पैदा करने के कारण खतरनाक होती है। इससे लोग चिड़चिड़े और इच्छा रहित हो जाते हैं।

आयत 3. निष्फल वचनों और **व्यर्थ बातें** जिन **से वाद-विवाद** हो, सुनने वालों को कोई लाभ नहीं होगा। ''लाभ'' (*sakan, साक़ान*) शब्द जिसे इस आयत में नकारात्मक के साथ बदला गया है, पुस्तक में (*ya'al, याल*) (15:3; 21:15; 22:2; 30:13; 34:9; 35:3) कई

बार मिलता है।

आयत 4. ''वरन् तू परमेश्वर का भय मानना छोड़ देता, और परमेश्वर पर ध्यान लगाना औरों से छुड़ाता है।'' अय्यूब के विरुद्ध लगाया गया यह गम्भीर आरोप था। एलीपज ने अपने अगले भाषण में इसी आरोप को दोहराया (22:4)। ''भय'' इब्रानी शब्द *yir'ah* (*यिरा*) से लिया गया है जिसका अनुवाद ''डर'' ही हुआ है। नीतिवचन की पुस्तक में बुद्धिमान ने कहा कि ''यहोवा का भय [डर] मानना बुद्धि का मूल है'' और ''बुद्धि का आरम्भ है'' (नीतिवचन 1:7; 9:10)। इससे ''आयु बढ़ती है,'' ''मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं'' और ''जीवन बढ़ता है'' (नीतिवचन 10:27; 16:6; 19:23)।

''ध्यान लगाना'' (*śichah, सिक्ह*) ''प्रार्थना'' के लिए कहा गया हो सकता है।[2] फ्रांसिस आई. ऐंडरसन के साथ एलीपज कह रहा था, ''अय्यूब मूर्ख ही नहीं बल्कि खतरनाक भी है। उसकी बातें खरे धर्म के लिए खतरा हैं।''[3]

आयतें 5, 6. एलीपज के अनुसार अय्यूब की अपनी बातें उसके **अधर्म** को दिखाती और उसे दोषी ठहराती थीं। एलीपज ने दावा किया कि अय्यूब ने जानबूझकर ऐसा करना चुना था। जॉन ई. हार्टले ने इस हवाले की समीक्षा यह कहते हुए की, ''[अय्यूब की] गलती उससे अपने मित्रों और परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करके अपना बचाव करवाती है। अपनी गलती को छुपाने के लिए वह *धूर्त व्यक्ति की ज़बान ... चुनता है*।''[4] **धूर्त** (*'arum, आरूम*) शब्द का इस्तेमाल अदन की वाटिका में सांप के विवरण के लिए हुआ है (उत्पत्ति 3:1)

अय्यूब पर सब कुछ जानने वाला होने का आरोप लगा (15:7-16)

[7]''क्या पहला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ? क्या तेरी उत्पत्ति पहाड़ों से भी पहले हुई? [8]क्या तू परमेश्वर की सभा में बैठा सुनता था? क्या बुद्धि का ठेका तू ही ने ले रखा है? [9]तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते? तुझ में ऐसी कौन सी समझ है जो हम में नहीं? [10]हम लोगों में तो पक्के बालवाले और अति पुरनिये मनुष्य हैं, जो तेरे पिता से भी बहुत आयु के हैं। [11]परमेश्वर की शान्तिदायक बातें, और जो वचन तेरे लिये कोमल हैं, क्या वे तेरी दृष्टि में तुच्छ हैं? [12]तेरा मन क्यों तुझे खींच ले जाता है, और तू आँख से क्यों सैन करता है? [13]तू भी अपनी आत्मा परमेश्वर के विरुद्ध करता है, और अपने मुँह से व्यर्थ बातें निकलने देता है। [14]मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो? या जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह है क्या कि निर्दोष हो सके? [15]देख, वह अपने पवित्रजनों पर भी विश्वास नहीं करता, और स्वर्ग भी उसकी दृष्टि में निर्मल नहीं है। [16]फिर मनुष्य अधिक घिनौना और भ्रष्ट है, जो कुटिलता को पानी के समान पीता है।''

तीखी नफरत के साथ एलीपज ने अय्यूब से एक से एक प्रश्न पूछ डाले ताकि वह परमेश्वर और मनुष्य के विरुद्ध अपने अहंकार से मन फिराए। एलीपज ने अय्यूब की गुस्ताखी के लिए उसे ताना मारा। परमेश्वर के भाषणों में कुछ सवालों में इनका अनुमान मिलता है जो अय्यूब को अपने ज्ञान और अनुभव की सीमाओं का स्मरण कराते हैं।[5]

आयत 7. ''क्या पहला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ?'' ''मनुष्य'' के लिए इब्रानी शब्द

(*'adam, आदम*) वही शब्द है जिसका इस्तेमाल उत्पत्ति 1:26 में हुआ है: ''फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।'' पहले मनुष्य आदम का नाम भी यही था। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''अय्यूब में 'मनुष्य/मनुष्यजाति' के लिए चार मुख्य शब्दों में से यह महत्वपूर्ण है कि इस आयत में, जो 'पहले मनुष्य' की बात करती है, *'ādām* (*आदम*) का इस्तेमाल हुआ है।''[6]

आयत 8. ''क्या तू परमेश्वर की सभा में बैठा सुनता था?'' ''सभा'' (*sod, सोड*) शब्द का अनुवाद गुप्त सलाह भी हो सकता है। NIV में है, ''क्या तू परमेश्वर की सभा में सुनता है?'' भाषा पुस्तक के आरम्भिक अध्यायों में स्वर्ग में लगे दरबार के दृश्यों की ओर ध्यान दिलाती है (1:6-12; 2:1-6)। बेशक अय्यूब की उस जानकारी तक पहुंच नहीं थी जो स्वर्गीय जीवों के लिए आरक्षित थी।

आयत 9. अय्यूब को यह सोचने के परिपल्पित अहंकार के लिए डांटा गया कि उसे मित्रों से अधिक ज्ञान है, चाहे उसने ऐसा कुछ नहीं कहा था।

आयत 10. यह आयत यह संकेत देती हुई लगती है कि सब मित्र अय्यूब से उम्र में बड़े थे। **पक्के बालवाले** और **पुरनिये** और **तेरे पिता से भी बहुत आयु के** शब्द अपेक्षाकृत कभी कभी मिलते हैं। ''पक्के बालवाले'' (*śib, सिब*) और जगह केवल 1 शमूएल 12:2 में क्रिया शब्द के रूप में मिलता है। ''पुरनिये'' (*yashish, याशिश*) अय्यूब की पुस्तक में ही मिलता है (12:12; 15:10; 29:8; 32:6)। ''तेरे पिता से भी बहुत आयु के'' अक्षरश: ''तेरे पिता से बड़े'' हैं। ऐसे इलाके में जहां उम्र को सम्मान दिया जाता था, यह एक ज़बर्दस्त डांट रही होगी (32:6, 7 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 11. ''परमेश्वर की शान्तिदायक बातें, और जो वचन तेरे लिये कोमल हैं, क्या वे तेरी दृष्टि में तुच्छ हैं?'' सेमुएल कॉक्स ने समझाया है:

> *परमेश्वर की शांतिदायक बातें,* जिससे उसके कहने का अर्थ वे आश्वासन थे जो, परमेश्वर के नाम में, उन्होंने उसे उसके दु:ख से निकालने की पिछली बातचीत में दिए थे, अच्छी परिस्थितियों में वापस लाने और सुखी बुढ़ापे के लिए, यदि वह अपनी गलती को मानकर उसे छोड़ देता।[8]

आयतें 12, 13. ''तेरा मन क्यों तुझे खींच ले जाता है?'' सामी विचार में ''मन'' (*leb, लेब*) भावनाओं, इच्छा और लगावों का केंद्र होता है। नीतिवचन की पुस्तक में कहा गया है, ''सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है'' (नीतिवचन 4:23); और ''अपना सदय शिक्षा की ओर, और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना'' (नीतिवचन 23:12)। यीशु ने बताया, ''भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है; क्योंकि जो मन में भरा है वही उसके मुंह पर आता है'' (लूका 6:45)।

''और तू आँख से क्यों सैन करता है? तू भी अपनी आत्मा परमेश्वर के विरुद्ध करता

है?'' हार्टले ने लिखा है, ''आंखों का दिल से गहरा रिश्ता है, क्योंकि वे दोनों मन तक जानकारी पहुंचाती है'' (तुलना 31:1, 7) और मन की बात सामने लाती हैं।''[9]

आयतें 14-16. अय्यूब के तर्क का खण्डन करने के लिए एलीपज ने रात को उसे दर्शन में मिले एक संदेश को दोहराया (4:17, 18)। इस तर्क के अनुसार अपने स्वभाव ही से **मनुष्य निष्कलंक** और **निर्दोष** नहीं हो सकता। **अपने पवित्र जनों** सम्भवतया स्वर्गदूतों के लिए कहा गया है (देखें 5:1)।[10] यदि परमेश्वर उन पर **विश्वास नहीं करता** (4:18), तो फिर वह **मनुष्य** पर क्यों करेगा **जो कुटिलता को पानी के समान पीता है**।

इस वचन में कही गई बातों के पीछे एलीपज का इरादा अय्यूब को दीन बनाने का और उसे सृष्टिकर्त्ता के सामने सृष्टि के रूप में अपनी जगह को पहचानने के लिए था। हम इतना कह सकते हैं कि एलीपज ने मनुष्यजाति का बहुत ही निचला रूप दिखाया।

दुष्टों की दुर्दशा का बुद्धिमानों द्वारा वर्णन (15:17-35)

17''मैं तुझे समझ दूँगा, इसलिये मेरी सुन ले, जो मैं ने देखा है, उसी का वर्णन मैं करता हूँ। 18(वे ही बातें जो बुद्धिमानों ने अपने पुरखाओं से सुनकर बिना छिपाए बताई हैं, 19केवल उन्हीं को देश दिया गया था, और उनके मध्य में कोई विदेशी आता जाता नहीं था)। 20दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा से तड़पता है, और बलात्कारी के वर्षों की गिनती ठहराई हुई है। 21उसके कान में डरावना शब्द गूँजता रहता है, कुशल के समय भी नाश करनेवाला उस पर आ पड़ता है। 22उसे अन्धियारे में से फिर निकलने की कुछ आशा नहीं होती, और तलवार उसकी घात में रहती है। 23वह रोटी के लिये मारा मारा फिरता है, कि कहाँ मिलेगी। उसे निश्चय रहता है कि अन्धकार का दिन मेरे पास ही है। 24संकट और दुर्घटना से उसको डर लगता रहता है; ऐसे राजा के समान जो युद्ध के लिये तैयार हो, वे उस पर प्रबल होते हैं। 25क्योंकि उसने तो परमेश्वर के विरुद्ध हाथ बढ़ाया है, और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह ताल ठोंकता है, 26और सिर उठाकर और अपनी मोटी मोटी ढालें दिखाता हुआ, घमण्ड से उस पर धावा करता है; 27इसलिये कि उसके मुँह पर चिकनाई छा गई है, और उसकी कमर में चर्बी जमी है, 28और वह उजाड़े हुए नगरों में बस गया है, और जो घर रहने योग्य नहीं, और खण्डहर होने को छोड़े गए हैं, उनमें बस गया है; 29वह धनी न रहेगा, और न उसकी सम्पत्ति बनी रहेगी, और ऐसे लोगों के खेत की उपज भूमि की ओर न झुकने पाएगी; 30वह अन्धियारे से कभी न निकलेगा; और उसकी डालियाँ आग की लपट से झुलस जाएँगी, और परमेश्वर के मुँह की श्वास से वह उड़ जाएगा। 31वह व्यर्थ बातों का भरोसा करके अपने को धोखा न दे, क्योंकि उसका बदला धोखा ही होगा। 32यह उसके नियत दिन से पहले पूरा हो जाएगा; उसकी डालियाँ हरी न रहेंगी। 33दाख के समान उसके कच्चे फल झड़ जाएँगे, और उसके फूल जैतून के वृक्ष के से गिरेंगे। 34क्योंकि भक्तिहीन के परिवार से कुछ बन न पड़ेगा, और जो घूस लेते हैं, उनके तम्बू आग से जल जाएँगे। 35उनको उपद्रव का गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते हैं: और वे अपने अन्त:करण में छल की बातें गढ़ते हैं।''

अपने दूसरे भाषण के इस लम्बे और अंतिम पद्य में एलीपज ने बुद्धिमानों के द्वारा याद

दिलाई गई दुष्टों की भयंकर हालत का स्पष्ट विवरण दिया। एच. एच. रोअले ने सही अवलोकन किया है कि ''इस अव्यावहारिक शिक्षा की केवल एक समस्या है कि यह अनुभव के सभी तथ्यों से मेल नहीं खाती।''[11] साधारण सूक्तियों को परम वाक्य में बदलना खतरनाक है।

आयत 17. एलीपज अय्यूब पर वह प्रकट करने के लिए उतावला था जो उसने **देखा** था। देखने के लिए यह सामान्य इब्रानी शब्द नहीं है। यह मूल शब्द *chazah* (*चाज़ाह*) से निकला है जिसका अर्थ है ''कल्पना करना/प्रकाशन के द्वारा देखना।''[12] भाषा एलीपज के ''रात के स्वप्नों'' के उसके पहले दावे से मेल खाती है (4:13)।

आयतें 18, 19. ''वे ही बातें जो बुद्धिमानों ने अपने पुरखाओं से सुनकर बिना छिपाए बताई हैं।'' एलीपज वह भी बताना चाह रहा था जो उसने देश के बुजुर्गों की परम्परा से सुन रखा था (15:10)। **''केवल उन्हीं को देश दिया गया था, और उनके मध्य में कोई विदेशी आता जाता नहीं था।''** हार्टले ने समझाया है, ''उनके बीच में कोई विदेशी नहीं रहता था इसलिए उनकी शिक्षाएं विदेशी प्रभाव के कारण बिगड़ी नहीं थीं। आम तौर पर यह माना जाता था कि परम्परा की पवित्रता को बनाए रखने के लिए विदेशी प्रभाव से दूरी आवश्यक है।''[13] एलीपज अय्यूब को यह समझा रहा था कि उसका संदेश सम्पूर्ण और भरोसेयोग्य है।

आयतें 20-24. ये आयतें **दुष्ट जन** के परेशान विवेक का स्पष्ट चित्रण हैं। पृथ्वी पर उसके सीमित **वर्ष पीड़ा** से भरे हैं। अपनी परेशानी में उसके कानों में **डरावना शब्द गूंजता रहता है**, और अपने वहम में उसे **कुशल** नहीं होता। वह यही सोचता रहता है कि **नाश करने वाला तलवार** से उस पर हमला कर देगा। अपने इन भयों के कारण वह एक बेचैन बंजारे वाला जीवन जीता है। अपनी बेचैन हालत के कारण वह **रोटी** की तलाश में रहता है। उसे अपने सामने केवल **अंधियारा** और **मौत** ही दिखाई देते हैं। उसके ऊपर उसके अपने ही **संकट और दुर्घटना** छाए रहते हैं।

आयतें 25-27. इन आयतों में दुष्टों की दुर्दशा के कारण दिए गए हैं। **परमेश्वर के विरुद्ध हाथ बढ़ाया है**, ''का अर्थ हमले के लिए या उसे चुनौती देने के प्रतीक के रूप में''[14] **सर्वशक्तिमान के विरुद्ध ताल ठोंकने** वाला व्यवहार उसके विरुद्ध बलपूर्वक या तगड़े आदमी की तरह काम करता है। यही चुनौती परमेश्वर ने अध्याय 40 में अय्यूब को दी: ''पुरुष के समान अपनी कमर बान्ध ले, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे बता'' (40:7)।

''और सिर उठाकर और अपनी मोटी मोटी ढालें दिखाता हुआ, घमण्ड से उस पर धावा करता है; इसलिये कि उसके मुँह पर चिकनाई छा गई है, और उसकी कमर में चर्बी जमी है।'' एंडरसन ने कहा कि ''एलीपज गुस्ताख व्यक्ति की हास्यास्पद कल्पना करता है जो, 'नायकों के समान नेक-मेल और मोटी मोटी ढालों से हथियारबंद होकर शद्दै पर आरोप लगाता है।'''[15]

आयत 28. इस आयत का अर्थ तय करना कठिन है। कुछ लोग इसे नगरों में निडरता से रहने वाले दुष्टों के हवाले के रूप में देखते हैं जिन्हें परमेश्वर की ओर से निषेध (श्राप) के अधीन रखा गया है (देखें यहोशू 6:26; 1 राजाओं 16:34; यशायाह 13:19, 20)।[16] भाषा आयत 23 से मेल खाती हो सकती है जहां दुष्ट जन को बंजारे या भगौड़े के रूप में दिखाया गया है; वह **उजाड़े हुए नगरों** के **खण्डहर** में जहां कोई और नहीं रहता, पनाह ढूंढ़ता है।

आयतें 29-33. एलीपज ने तर्क दिया कि दुष्ट जन की **सम्पत्ति बनी न रहेगी** और यह कि वह मृत्यु से **न निकलेगा**। उसकी बर्बादी के विवरण के लिए खेतीबाड़ी में इस्तेमाल होने वाले रूपक इस्तेमाल हुए हैं:

1. **''ऐसे लोगों के खेत की उपज भूमि की ओर न झुकने पाएगी''** (15:29)।
2. **''उसकी डालियाँ आग की लपट से झुलस जाएँगी''** (15:30)।
3. **''उसकी डालियाँ हरी न रहेंगी''** (15:32)।
4. **''दाख के समान उसके कच्चे फल झड़ जाएँगे''** (15:33)।
5. **''उसके फूल जैतून के वृक्ष के से गिरेंगे''** (15:33)।

एलीपज द्वारा ''खेत की उपज,'' ''डालियां,'' ''दाख'' और ''जैतून के वृक्ष'' ''का इस्तेमाल दुष्टों के जीवन और अंत पर ज़ोर देने के लिए किया गया है।[17]'' इतिहास में आता है कि बाद में परमेश्वर ने अपने लोगों के अविश्वास के कारण इस्राएल देश पर ऐसी विपत्तियां भेजीं (होशे 2:8, 9; आमोस 4:9; हाग्गै 2:14-19)।

आयत 34. परिवार (*'edath, ऐडाथ*) '''झुंड, गुट, दल, समूह' जिसका एक साझा अगुवा हो को दर्शाने के लिए पुराने नियम में बार-बार होने वाला शब्द है।''[18] **भक्तिहीन** (*chanep, चानेप*) सांसारिक या अधार्मिक लोग (8:13 पर टिप्पणियां देखें) है। उनसे **कुछ बन न पड़ेगा** यानी वे बिना संतान के होंगे और उनकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो जाएगी।

आयत 35. ''उनको उपद्रव का गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते हैं: और वे अपने अन्तःकरण में छल की बातें गढ़ते हैं।'' एलीपज ने अय्यूब पर सीधे-सीधे इन पापों का आरोप तो नहीं लगाया पर यह स्पष्ट है कि उसका मानना था कि वह उन पापों का दोषी है। नहीं तो उसे इतना दुःख न उठाना पड़ता। जैसा कि KJV में स्पष्ट है, एलीपज का भाषण *''belly''* (*पेट*) (*beten, बेटन*) शब्द के साथ खत्म होता है। उसने यह संकेत दिया कि अय्यूब के पेट में गर्म हवा (15:2) और छल (15:35) भर आए थे।

प्रासंगिकता

घमण्ड से भरा (अध्याय 15)

एक समझदार, परमेश्वर का भय मानने वाले चरवाहे के अधीन सेवा करते हुए जो बाद में मेरा सलाहकार और मित्र बन गया था, निराश होने पर सलाह के लिए मैं उनके पास चला जाता था। मैं उस ज्ञान जो परमेश्वर के इस जन के द्वारा मुझे दिया गया, कभी नहीं भूलता। उन्होंने कहा था, ''लोग बहुत बार तुम्हें निराश करेंगे, पर हमारा परमेश्वर ऐसा कभी नहीं करेगा। सो, अपना विश्वास और भरोसा परमेश्वर में रखो।'' बीस से अधिक साल की अपनी सेवकाई में मैंने उनकी सलाह को माना है यह सही ठहरी है। हमारा परमेश्वर निराश नहीं करता, पर दूसरे लोगों के द्वारा हम कभी न कभी निराश हुए हैं और निराशा दुःख देती है, किसी भरोसेमंद मित्र के द्वारा निराशा के घाव दिए जाने पर वे अधिक गहरे होते हैं। जब वे किसी ऐसे मित्र से मिले हों जो घमण्ड से भरा है, तो वे घाव और गहरे हो जाते हैं। बातचीत के पहले दौर में मित्रों ने न केवल अय्यूब को

निराश किया बल्कि उनकी बातें भी उसे बहुत दु:ख पहुंचाने वाली थीं।

अध्याय 15 का आरम्भ अय्यूब और उसके मित्रों के बीच भाषणों के दूसरे दौर में आरम्भ होता है। क्या यह मित्र अधिक सहानुभूति देने वाले और सांत्वना रखने वाले थे? अफसोस की बात है कि ऐसा नहीं था। वास्तव में उनकी टिप्पणियां और कठोर और अधिक तीखी हो गई थीं। उनकी कठोर टिप्पणियां और करुणा का न होना उनके घमण्ड का कारण था। इस अध्याय में एलीपज ने दूसरी बार घमण्ड से बात की।

एलीपज घमण्ड से भरा हुआ था। एलीपज ने जब दूसरी बार अय्यूब से बात की तो उसकी आरम्भिक टिप्पणियां दूसरे को नीचा दिखाने वाली थी (15:1-3)। उसने अय्यूब पर घमण्डी होने (15:4) और ''धूर्त लोगों के बोलने की रीति'' पर छुपाने (15:5) का आरोप लगाया। मुंहफट होने के लिए एलीपज अय्यूब पर झूठा होने का आरोप लगा रहा था (15:6)। इन आरोपों से अय्यूब को गहरा दु:ख पहुंचा क्योंकि वह सच्चा आदमी था। घमण्ड आता कहां से है? लूका 6:45 में यीशु ने हमारे लिए इस प्रश्न का उत्तर दिया। उसने कहा, ''भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है; क्योंकि जो मन में भरा है वही उसके मुंह पर आता है।'' एलीपज के भाषण को पढ़ने से पता चलता है कि उसका मन घमण्ड से भरा हुआ था।

परमेश्वर घमण्ड से घृणा करता है। नीतिवचन 6:16-19 में बाइबल हमें बताती है, ''छह वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है'' और उनमें से पहली वस्तु ''जिससे उसको घृणा है'' वह व्यक्ति है जिसकी ''घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें'' हैं। नीतिवचन 3:34 से उद्धृत करते हुए, याकूब 4:6 और 1 पतरस 5:5 दोनों कहते हैं, ''परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।''

घमण्ड आत्म-निर्भरता को बढ़ावा देता है। घमण्ड ने बाबुल का बुर्ज बना दिया पर परमेश्वर उनकी योजना के विरुद्ध था और परमेश्वर ने उनकी भाषा को बिगाड़ दिया (उत्पत्ति 11:1-9)। घमण्ड के कारण नामान एलीशा से उसे अपने कोढ़ से शुद्ध होने के लिए यरदन में जाकर सात बार डुबकी लगा लेने के निर्देश से क्रोधित हो गया (2 राजाओं 5:11)। घमण्ड के कारण राजा नबूकदनेस्सर अपने शाही महल की छत के ऊपर टहलते हुए यह कहने लगा, ''क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?'' (दानिय्येल 4:30)। बाइबल बताती है कि ये शब्द अभी उसके मुंह में ही थे कि राजा को मनुष्यों के बीच में से निकाल दिया गया और वह पशुओं सा बन गया (दानिय्येल 4:31-33)। नीतिवचन 16:18 हमें बताता है, ''विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड होता है।''

घमण्ड के कारण उड़ाऊ पुत्र अपने पिता से समय से पहले अपनी विरासत मांगने के लिए चला गया और इसके कारण वही बेटा दूर देश में चला गया (लूका 15:12, 13)। घमण्ड ने उसके बड़े भाई को भी वश में ले लिया जिसने अपने उड़ाऊ भाई के पश्चात्ताप करके घर लौटने पर अड़ियल ढंग से अपने पिता के साथ आनन्द मनाने से इनकार कर दिया (लूका 15:28-30)। घमण्ड से भरे पतरस ने यीशु को बताया कि ''यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा'' (मत्ती 26:33)। बहुत से पापों का कारण घमण्ड

ही होता है और परमेश्वर घमण्ड और अहंकार दोनों से घृणा करता है (नीतिवचन 8:13)। वास्तव में प्रिय प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है कि ''जीविका का घमण्ड, पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है'' (1 यूहन्ना 2:16)।

घमण्ड अशिष्ट है। एलीपज अशिष्ट था जब उसने अलंकारिक प्रश्न पूछा कि ''क्या पहला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ'' (15:7)। अशिष्ट होना और ताना देकर बात करना घमण्ड का एक और चिह्न है। एलीपज ने अय्यूब से यह पूछकर कि, ''तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते? तुझ में ऐसी कौन सी समझ है जो हम में नहीं?'' (15:9) सबसे अहंकारी बातें कहीं जो कोई किसी को कह सकता है। कोई अहंकारी व्यक्ति ही ऐसे दोनों प्रश्न पूछेगा। तेजी तेजी से पूछने के ढंग में एलीपज ने अय्यूब का अपमान करना और उस पर आरोप लगाना जारी रखा (15:11-16)।

श्रेष्ठता वाले रवैये के साथ घमण्ड ऊंची आवाज में लैक्चर देता है पर सुनने के लिए रुकता नहीं है। एलीपज ने अय्यूब के अपमान के लिए एक से एक बात कही और उसने कम नहीं किया। श्रेष्ठता वाले रवैये के साथ एलीपज ने अय्यूब को उसका लम्बा चौड़ा उपदेश सुनने की आज्ञा दी (15:17-35)। क्या आपको कभी ऐसा कोई व्यक्ति मिला है जिससे बातें करते हुए उसकी आवाज ऊंचे से ऊंची होती जाए, उसके शब्द कठोर से कठोर होते जाएं? यहां पर एलीपज एक ऐसा ही व्यक्ति था।

कुलुस्सियों 4:3, 4 में पौलुस ने कलीसिया से उसके लिए प्रार्थना करने को कहा, ''कि [वह] उसे ऐसा प्रकट [करे] जैसा [उसे] करना उचित है।'' फिर उसने इस शब्दों के साथ कलीसिया को चुनौती दी, ''तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए'' (कुलुस्सियों 4:6)। अफसोस कि अय्यूब को जवाब देते हुए एलीपज की बातों में अनुग्रह का कोई संकेत नहीं था। अपने दु:ख और पीड़ा में यहां पर अय्यूब को ऊंचे ऊंचे लैक्चर या लम्बे चौड़े उपदेश की आवश्यकता नहीं थी। इसके बजाय उसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उस पर ध्यान दे और उसे समझ सके। अय्यूब को रोने के लिए कंधा चाहिए था; उसे एक तरसवान मित्र की आवश्यकता थी। एलीपज इतना दीन और कृपालु मित्र नहीं था।

सारांश। हर मसीही को मालूम है कि ''परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है'' (याकूब 4:6), और बहुत से लोग याकूब 4:10 से उद्धृत कर सकते हैं, ''प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।'' क्या आप अगली आयत को उद्धृत कर सकते हैं जो याकूब 4:11 कहती है, ''हे भाइयो, एक दूसरे की बदनामी न करो।''? अय्यूब के जैसे लोगों में घमण्ड का पता लगाना आसान होता है परन्तु इसे अपने अंदर देख पाना कठिन है। याकूब 1:26 कहता है, ''यदि कोई अपने आपको भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है।'' मसीही लोगों के रूप में, हमें अपने आपको दीन बनाना, अपनी जीभों को काबू में रखना और एक दूसरे के प्रति कृपालु होना सीखना आवश्यक है। एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 139. [2]देखें NJPSV यहां प्रयुक्त इब्रानी शब्द प्रार्थना के समानार्थी शब्द के रूप में भजन संहिता 102:1 में मिलता है। [3]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 175. [4]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 245. [5]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 134. [6]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 174. [7]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:745. [8]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 192. [9]हार्टले, 247. [10]वहीं।

[11]रोअले, 137. [12]आल्डन, 177. [13]हार्टले, 251. [14]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 298. [15]एंडरसन, 178. [16]रोअले, 141. [17]हेली, 146. [18]रेबर्न, 303.